प्रकाशनार्थ

पटना, 24 फरवरी। ''एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) में एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच (आईएचआईपी) का उपयोग)'' विषय पर जिला स्तरीय अधिकारियों के लिए प्रशिक्षकों के एक दिवसीय कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण का स्वागत भाषण देते हुए डॉ रंजीत कुमार, स्टेट सर्विलांस आॅफिसर, आइडीएसपी ने कहा कि आधुनिक युग में एकीकृत रूप में रोगों की वास्तविक समय पर निगरानी बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। चूंकि स्वास्थ्य नीति आंकड़ों की रिपोर्टिंग के आधार पर तैयार की जाती है, इसलिए राज्य में रिपोर्टिंग प्रणाली को मजबूत करने की जरूरत है। यह कार्यक्रम बिहार राज्य स्वास्थ्य सोसायटी, बिहार सरकार के सहयोग से आद्री स्थित सेंटर फॉर हेल्थ पॉलिसी (सीएचपी) द्वारा आयोजित किया गया था।

विषय-प्रवेश करते हुए आद्री के सदस्य सचिव प्रोफेसर प्रभात पी घोष ने जोर देकर कहा कि स्वास्थ्य पर खर्च को अनुकूलित करने की आवश्यकता है, क्योंकि संसाधन सीमित हैं। भौतिक बुनियादी ढांचे को मानव संसाधन के साथ समन्वित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने कहा कि एक अच्छी इमारत वाला अस्पताल तभी प्रभावी होता है जब उसके डॉक्टर भी मौजूद हों।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के डॉ. देवांग जरीवाला ने कहा कि सभी स्वास्थ्य पोर्टल जल्द ही आइएचआइपी में शामिल होने जा रहे हैं और इसलिए आइएचआइपी ही भविष्य है। फील्ड स्तर के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि डेटा की रिपोर्टिंग हो सके। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के डॉ नीरज कुमार ने आइएचआइपी का एक अवलोकन प्रस्तुत किया। निर्णय लेने वालों को कार्रवाई करने के लिए आइएचआइपी संचारी रोग निगरानी पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करता है। इसमें महामारी विज्ञान की दृष्टि से 33 महत्वपूर्ण बीमारियों को शामिल किया गया है जबकि आइडीएसपी के तहत केवल 13 रोग हैं। डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि डा. राजेश कुमार वर्मा ने बताया कि मानव संसाधन की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा है और इस मुद्दे को देखने की आवश्यकता है। जिला और प्रखंड स्तर पर साप्ताहिक बैठकों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है और इसे जारी रखा जाना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के बाद सात तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इनमें से कुछ के शीर्षक थे जैसे- मृत्यु के मामलों सहित 'एस, पी, एल फॉर्म के तहत डेटा दर्ज करना और प्रबंधित करना' , 'प्रकोप प्रबंधन' , 'आइएचआइपी पोर्टल के तहत प्रशासनिक कार्य' , आदि।

इस अवसर पर बिहार के 38 जिलों की जिला निगरानी इकाइयों के लगभग 230 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी (एसीएमओ), जिला महामारी विज्ञानी (डीई), जिला डेटा प्रबंधक (डीडीएम), डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ), लैब तकनीशियन और जिला निगरानी और मूल्यांकन अधिकारी (डीएम और ईएस) शामिल थे।

श्री कुमार कौस्तुभ, स्टेट एंटोमोलॉजिस्ट, एसएचएस, बिहार सरकार ने समारोह का संचालन किया और श्री आलम मोजाहिद, सीएचपी, आद्री ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)